राज
कॉमिक्स
विशेषांक
मूल्य 20.00 संख्या 211
त्रिफना
नागराज

नागराज के खज़ाने की तीन काल-मणियों को हथियाने निकले नागपाशा और नागगुरु। लेकिन तांत्रिक अंकुश की मदद से खज़ाना ले उड़ी नगीना! और जा पहुंची नागद्वीप। भारती और वेदाचार्य बन्दी बने गुरुदेव के और उनको बताना पड़ा कालदूत का पता जिसके पास था त्रिफना सर्प! जिसके बगैर काल मणियां बेकार थीं। गुरुदेव और नागपाशा जा पहुंचे नागद्वीप और विषंधर द्वारा प्राप्त जानकारियों के आधार पर राजा मणिराज की भस्म ले उड़े। इधर कुछ अद्भुत बना रहा था गुरुदेव! और नगीना के अंकुश दास बन चुके कालदूत को चाहिए थी विसर्पी की जान। विसर्पी, जो नागराज के पास महानगर आ गई थी। नागराज और कालदूत का हुआ टकराव और कालदूत की कुंडली में फंस गया नागराज! यह सब आपने पढ़ा पूर्व प्रकाशित विशेषांक **मृत्युदंड** और **नागद्वीप** में। अब पढ़िए इस महागाथा का तीसरा भाग—

त्रिफना

संजय गुप्ता की पेशकश

कथा: जॉली सिन्हा। चित्र: अनुपम सिन्हा। इंकिंग: विनोद कुमार, विट्ठल कांबले। सुलेख एवं रंगसंयोजन: सुनील पाण्डेय। सम्पादक: मनीष गुप्ता।
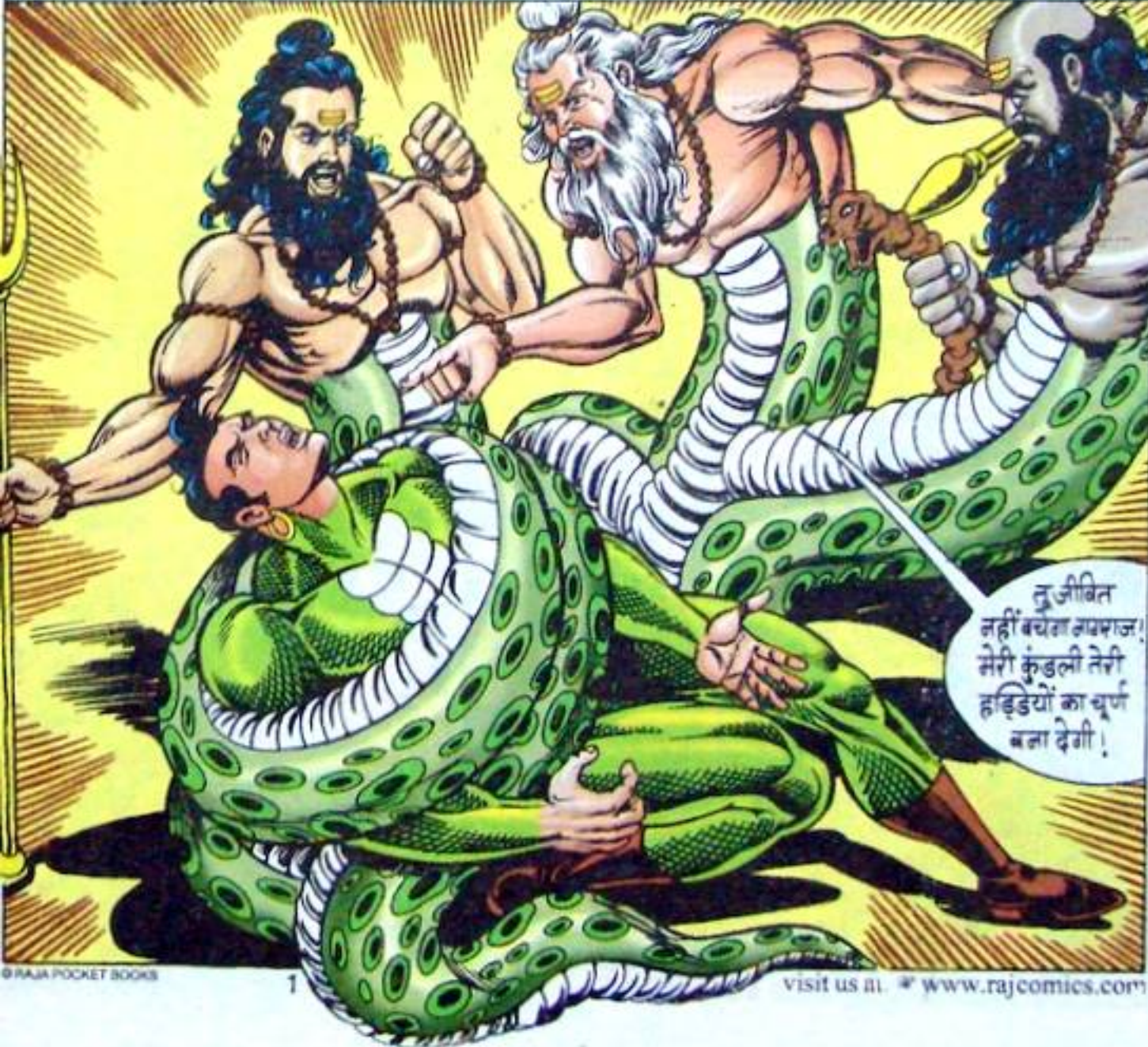
नागराज बेहोश हो रहा है दादाजी! कुछ करिए! कालदूत को रोकिए!
पता नहीं, मेरे पास महात्मा कालदूत को रोकने लायक शक्ति है भी या नहीं! लेकिन मैं प्रयास अवश्य करूंगा!

ह्रीम ऽऽऽ प्रचंड चंड चंडिका चामुंडी ऽऽऽ तिलिस्म रुद्राक्षे ऊर्जाम् प्रवाहित ऽऽऽ
ह्रीऽऽऽ म!

रुद्राक्ष तिलिस्म के ऊर्जा वार से कालदूत तड़प उठे-
रुक जा वेदाचार्य! वर्ना मुझे तुझको भी मारना पड़ेगा! मुझको विवश न कर!
नागराज से पहले मेरी जान जाएगी, महात्मा! स्वामी से पहले सेवक मरेगा!

नगीना के गुलाम बने होने के बावजूद कालदूत ने कुछ हद तक होशोहवास कायम रखे थे-
आऽऽऽऽऽऽऽह!

आऽऽऽ ह! दादा वेदाचार्य, आप... अपने वार रोक दीजिए। आपके वारों के जवाब में महात्मा कालदूत महानगर में तबाही फैला रहे हैं!

आऽऽऽ ह!
मैं... खुद इनसे निपटने का कोई... रास्ता तलाश लूंगाऽऽऽ

नागराज! संभालो अपने आपको! अगर कालदूत जीत गए तो ये इनकी जीत नहीं, हार होगी! हम सबकी हार होगी! धर्म की हार होगी! और चारों तरफ तांडव करेगा अधर्म! सिर्फ तुम ही अधर्म को रोक सकते हो नागराज। सिर्फ तुम!

आऽऽऽ ह! मैं जीतूंगा! मैं इस कुंडली से छूटूंगा! महात्मा कालदूत एक सांप हैं! और सांप की एक बहुत बड़ी कमजोरी होती है!
नागराज ने किसी तरह से एक हाथ बाहर निकाला—

धड़ाम
सांप की दुम! दुम पर पड़ी चोट को सांप बर्दाश्त नहीं कर पाता! महात्मा कालदूत भी सहन नहीं कर पाएंगे!...
...और कुंडली खुल जाएगी! खुल गई बन्द कुंडली!
लेकिन दुम पर चोट पड़ने से हर सांप बिफर उठता है! कालदूत भी और उग्र हो गए हैं!
तड़ाक

हमने तुझको बहुत मौके दिए नागराज! तुझ पर कोई घातक वार सिर्फ इसलिए नहीं किया, ताकि तू विसर्पी को हमारे हवाले कर दे! लेकिन अब हम विसर्पी को तेरी मौत के बाद ही मारेंगे!
हम तुझ पर घातक तूफान का वार करेंगे! इस वार से तू तो क्या, इन्द्र भी नहीं बच सकता!
मर, नागराज, मर!

ओह, नागराज!
यह क्या? विसर्पी और भारती दोनों ही गश खाकर गिर रही हैं! शायद इनको नागराज की मौत का यकीन हो गया है!
लेकिन मेरे रहते नागराज नहीं मर सकता! मैं रोकूंगा कालदूत को! अपने अंग-वस्त्र के पाश से! इसकी जकड़ से कालदूत भी नहीं छूट पाएंगे!
आऽऽऽह! तेरा वस्त्र पाश भी तेरे तिलिस्मी ज्ञान की तरह विलक्षण है, वेदाचार्य!...
... लेकिन तुझमें एक कमी है! तू अंधा है! अपनी मानस तरंगों की मदद से देखता है! ले! मैं तेरी मानस तरंगें ही रोक देता हूं!
ओह! मुझे कुछ नजर नहीं आ रहा है!
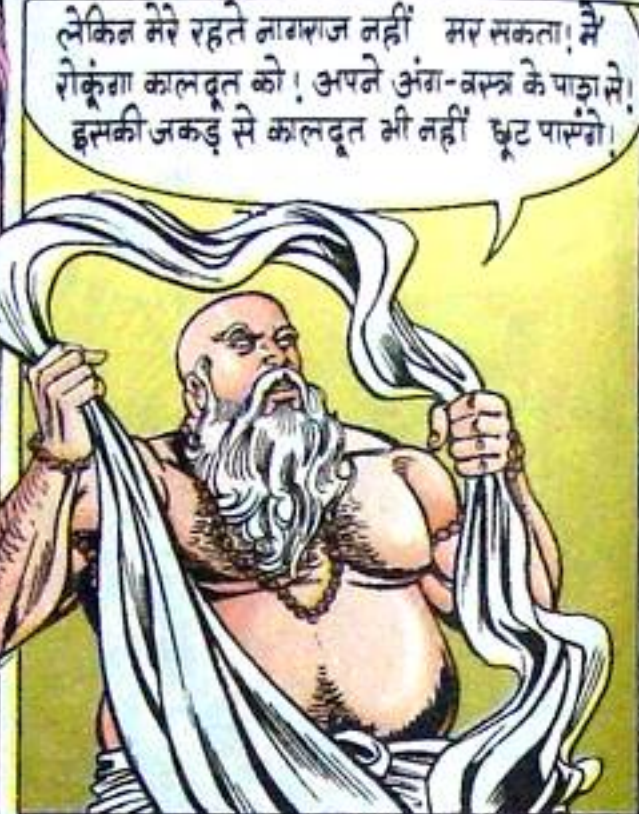
मैं जानता हूं! अब तू अपनी तरफ आता ये वार भी नहीं देख पाएगा!
आऽऽऽ हं!
नागराज की मौत देखने के लिए अब कोई भी होश में नहीं था-
होश में अगर अभी भी कोई था तो सिर्फ कालदूत-
और नागराज-
कालदूत के वार से बचने का कोई तरीका नहीं है! सिर्फ एक ही रास्ता है। कालदूत को अंकुश की दासता से मुक्त कराना होगा! लेकिन यह काम मैं कैसे करूं? कैसे कालदूत के मस्तिष्क का संपर्क, अंकुश के संकेतों से काटूं?
सुन्न! हां! ये एक रास्ता है! वाह! अब मैं कालदूत को अंकुश की दासता से मुक्त कर दूंगा!
नागफनी सर्प, कालदूत की पूंछ पर जा कसा-
और पूंछ में हो रहा रक्त संचार रुक गया-
नागफनी सर्प इनको काट सकते नहीं! मेरे सर्प बेअसर हैं! ओह! अब तो मेरे हाथ-पैर भी सुन्न हो रहे हैं। हृदय, रक्त का संचार नहीं कर पा रहा है!
साथ ही साथ, अंकुश के वे संकेत भी रुक गए, जो रक्त के माध्यम से कालदूत के मस्तिष्क तक पहुंचकर उनको गुलाम बनाए हुए थे-

महात्मा कालदूत का दिमाग, अंकुश की गुलामी से आजाद होने लगा-
आऽऽऽह! दिमाग पर पड़ा बोझ हट रहा है! अब मैं स्पष्ट रूप से सोच-समझ सकता हूं!
हम तुम्हारा धन्यवाद भी करते हैं, नागराज! और तुमसे क्षमा भी मांगना चाहते हैं! हम सब कुछ देख और समझ रहे थे, लेकिन अंकुश के कारण नगीना का आदेश मानने को मजबूर थे!
बातें बाद में करिएगा महात्मन! पहले अपनी पूंछ से उस अंकुश को तो निकाल फेंकिए! उसको सिर्फ आप ही निकाल सकते हैं! वरना अगर नागफनी सर्प की जकड़ ढीली हुई तो फिर से मेरी और विसर्पी की जान पर बन आएगी!
अवश्य, नागराज! अवश्य!
और आप दोनों कहां चले गए थे दादा वेदाचार्य? मैं तो आपको ढूंढ़-ढूंढ़कर परेशान हो गया था।

हमारा नागपाशा के गुरू, गुरुदेव ने छल से अपहरण कर लिया था नागराज! हम उसकी प्रयोग-शाला में बन्दी थे!
गुरुदेव ने? लेकिन उसने ऐसा क्यों किया? आपसे भला उसको क्या काम पड़ गया दादा वेदाचार्य?
जवाब में वेदाचार्य नागराज को सारा घटनाक्रम सुनाते चले गए-
अब चौंकने की बारी कालदूत की थी-
हमारा पता? हमारा पता ये गुरुदेव क्यों जानना चाहता था? हम तो उसको जानते तक नहीं!
नागराज के वंश की पांडुलिपी के अनुसार आपके पास एक मूर्ति है, त्रिफना सर्प की!
वह उसी को हासिल करना चाहता है!
त्रिफना! नागराज के वंश वालों को इसके विषय में कैसे पता चला?
क्योंकि त्रिफना के तीन सिरों पर स्थापित मणियां नागराज के खानदानी खजाने में हैं!
किसी राजा सुमेरनाथ ने नागराज के एक पूर्वज राजा अक्षराज को वे मणियां उपहार स्वरूप प्रदान की थीं!
ओह! तो उस रुद्र ने मेरे साथ चाल चली थी! वह मणियां भी उसने पृथ्वी पर ही भिजवा दी थीं!
किस रुद्र ने महात्मन? यह सब क्या रहस्य है? आपने अपने बारे में हमको कभी कुछ नहीं बताया! आप तीन शरीर वाले कैसे हो गए? और इतनी शक्तियां आपके पास कहां से आईं?
बताऊंगा विसर्पी! लेकिन अभी उसका समय नहीं है!

अभी हमको नागद्वीप जाना है। या तुम भूल गई हो कि नागद्वीप की पूरी प्रजा अभी भी नगीना की गुलाम बनी हुई है!
नहीं महात्मन! प्रजा हमेशा मेरा पहला उत्तरदायित्व रही है, और रहेगी!
मैं भी साथ चलूंगा महात्मन!

क्योंकि एक तो मुझे नगीना से अपने उस खजाने को वापस लाना है, जो अब हमारे देश की अमानत है!
और दूसरे नगीना का तांत्रिक अंकुश मुझ पर असर नहीं करेगा!
मैं नगीना को पकड़ने में आपकी मदद कर सकता हूं!

हम भी नागद्वीप चलेंगे, महात्मा कालदूत!
और हमारे नागद्वीप जाने का कारण आप सबके कारणों से बड़ा है!
वह क्या वेदाचार्य?

नागपाशा और गुरुदेव इस वक्त नागद्वीप में हैं!
और उनके बारे में जितना मैं जानता हूं, उतना और कोई नहीं जानता!

ठीक है! हम तुम सबको अपनी योगमाया से नागद्वीप ले जाएंगे!
चलो!

नागद्वीप में खतरा अपने पैर फैलाता जा रहा था-
अद्भुत! आश्चर्यजनक! तुमने मेरा मतलब... आपने इतनी जल्दी यहां पर यंत्र भी खड़े कर दिए! कैसे?
और... और इस गोले के अन्दर क्या तैर रहा है?
इस गुफा की चट्टानों में लोह तत्व प्रचुर मात्रा में मौजूद है विषंधर! उसी से मैंने ये यंत्र बनाया है! और इस गोले के अन्दर जो बन रहा है, वह कुछ ही घंटों में अपने आप तुम्हारे सामने आ जाएगा!
तब तक इंतजार क्यों करें गुरुदेव? तब तक मैं जाकर नगीना को ठिकाने लगा आता हूं!
जाऊं?
इस गुप्त स्थान से बाहर निकलने की मूर्खता मत करो!
जब तक उसके पास तांत्रिक अंकुश है, तुम उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकते!
वैसे भी नगीना कुछ घंटों के बाद अपने आप हमारे काबू में आ जाएगी!
गुरुदेव! गुरुदेव!
केंदुकी! क्या हुआ? तुम इतने घबराए हुए क्यों हो?

वो... वो दोनों बच गए गुरूदेव!
वेदाचार्य और भारती भाग गए!

भाग गए! मैंने तुमसे उनको मारने के लिए कहा था! और तूने उनको भगा दिया!

अब उनके बदले तू मरेगा, केंदुकी!
मा... माफ कर दो गुरूदेव! इस बार जान बख्श दो! आपकी कसम, आइन्दा ऐसी भूल नहीं होगी!
इस बार बख्श दी!
दुबारा नहीं छोड़ूंगा!

वेदाचार्य को पता है कि मैं नागद्वीप आया हूं। वह भी मेरे पीछे जरूर आएगा! और अपने तिलिस्मी यंत्रों के जरिए इस गुप्त स्थान को जरूर ढूंढ निकालेगा!
ऐसा नहीं होना चाहिए! अभी यंत्र की प्रक्रिया पूरी होने में थोड़ी देर है!

विषंधर! तुम बाहर जाकर पूरी स्थिति पर कड़ी नजर रखो! और कोई भी नई घटना घटते ही मुझसे तुरन्त सम्पर्क करना! जाओ!

महात्मा कालदूत के साथ विसर्पी नागराज वेदाचार्य और भारती नागद्वीप पहुंच चुके थे-
खतरा दो तरफ है महात्मा कालदूत! नगीना और नागपाशा! हमको भी दो गुटों में बंट जाना चाहिए! भारती के साथ मैं नागपाशा एवं गुरुदेव की खोज में जाता हूं, और आप लोग नागद्वीप वासियों को नगीना से छुटकारा दिलाइए!
वैसे चिन्ता की बात नहीं है। त्रिफना को सिर्फ राजदंड पाकर ही हासिल किया जा सकता है, और राजदंड नागपाशा का कभी नहीं हो सकता!
आप ठीक कह रहे हैं, वेदाचार्य!
भारती! तुम सामान लाना भूली तो नहीं!
नहीं दादाजी! हम गुरुदेव की प्रयोगशाला से निकलकर सबसे पहले घर इसीलिए गए थे, ताकि मैं फेसलेस की पोशाक और आपके कुछ तिलिस्मी यंत्र ले सकूं!
सब कुछ इस पाऊच बेल्ट में मौजूद है!
अति उत्तम! अब तुम तुरन्त फेसलेस की पोशाक पहन लो!
मैं नहीं चाहता कि इस बार तुम भारती के रूप में नागपाशा और गुरुदेव के सामने जाओ!
जैसी आपकी आज्ञा दादाजी!

कालदूत, नागराज और विसर्पी भी रणनीति पर विचार कर रहे थे-
नगीना के पास अद्भुत रत्नों की भी शक्ति है और अंकुश की भी! साथ ही साथ पूरी नागद्वीप की प्रजा उसके साथ है। हमको जो भी करना है बहुत सोच समझ कर करना होगा!
राजदंड! हां राजदंड को नगीना नहीं उठा सकती! वह अभी भी वहीं पर होगा जहां पर मैंने उसे गिराया था।

एक बार वह राजदंड मेरे हाथ में आ गया तो उसकी शक्ति नगीना पर हावी हो जाएगी!
तुम ठीक कह रही हो विसर्पी! आओ, हम वहीं चलते हैं!

राजदंड वहीं पर था-
आहा! अब नगीना नहीं बचेगी!

लेकिन तभी-
विसर्पी!

लेकिन नागराज, विसर्पी को बचा नहीं पाया-
वार होते रहे-
बेशुमार चट्टानें गिरती रहीं-
और समतल सतह पर एक नया पहाड़ खड़ा हो गया-
हा हा हा! देखा कालदूत! मर गई विसर्पी! और मर गया नागराज! अब राजदंड मेरा है!

मैं अपने मुंह के जरिए तुम सबकी हर हरकत पर पल-पल नजर रखे हुए थी! अब मैं बनूंगी सम्राज्ञी और नागद्वीप का भी खजाना होगा मेरा! सिर्फ मेरा!
बहुत अपराध कर लिए तूने! अब तेरे हिस्से में सिर्फ मौत आएगी, नगीना!
मेरा समय व्यर्थ मत कर! पहले मेरे अंकुश से बचले! उसके बाद मुझे मौत देने की सोचना!
ओह! यह अंकुश तो किसी ढीठ बच्चे की तरह वार खाकर भी मेरे पीछे पड़ा हुआ है! मुझे इसको अपने शरीर में धंसने से रोकना होगा!
वर्ना मैं फिर नगीना का गुलाम बन जाऊंगा!

कहानी 19 पेज से जारी

मुझे रोकने वाला अब कोई नहीं है!

आऽऽऽई!

तड़

तू... तू बच कैसे गया नागराज! अद्‌भुत है तेरी शक्ति! चट्टानों के एक पूरे टीले को तूने तिनकों की तरह हवा में बिखेर दिया!

ये... ये चट्टानें एकाएक कांपने क्यों लगीं?

ये तो... ये तो हवा में उठ रही हैं! कैसे?

मेरे साथ-साथ विसर्पी भी बच गई है नगीना! अब तेरी कोई चाल कामयाब नहीं होगी! खजाना और अंकुश मेरे हवाले कर दे!

बिसर्पी बच जरूर गई है नागराज! लेकिन अभी वह बेहोश है! और इस वक्त उसको अंकुश का गुलाम बनाना बहुत आसान है!
उसके बाद ये खुद-ब-खुद राजदंड मुझको सौंप देगी।
नागराज के रहते तेरा कोई भी वार बिसर्पी तक नहीं पहुंच सकता!
तूने अंकुश अपने शरीर पर झेल लिया!
यानी अब तू मेरा गुलाम बन गया है! वाह, वाह! ये काम मैंने पहले क्यों नहीं किया! बिसर्पी को मारने के चक्कर में मैंने इस बात पर तो ध्यान ही नहीं दिया था!
हा हा हा!
ये अंकुश मुझ पर बेअसर है नगीना!
जिसने तुझे यह अंकुश दिया है, उसने ही मुझे इससे मुक्त रहने का वरदान भी दिया है!
ओह! लेकिन कुछ भी हो, तुझे मेरे और बिसर्पी के बीच से हटना होगा। अभी मेरे पास गुलामों की फौज है! और उस फौज से तू भी नहीं जीत सकता!
गुलामो!

आह, स्वामिनी!
अब मैं देखती हूं कि तू विसर्पी की रक्षा कितनी देर तक कर पाता है!
ओह! नागार्जुन, सिंह-नाग और नागप्रेती नगीना का आदेश मिलते ही मेरी तरफ बढ़ते आ रहे हैं! महात्मा कालदूत, विसर्पी की रक्षा अब आपको करनी होगी!
मैं तो खुद अंकुश से निपटने में व्यस्त हूं, नागराज! मैं विसर्पी की निगरानी भला कैसे कर पाऊंगा?

तब तो मुझे ही विसर्पी की सुरक्षा का प्रबंध करना होगा। एक बार फिर देव कालजयी द्वारा दिए गए विशेष नागफनी सर्पों को प्रयोग में लाना होगा!
क्योंकि ये किसी भी तंत्र-वार को रोक सकते हैं!
ओह! मेरा अंकुश इस 'सर्प कवच' को भेद नहीं पा रहा है!
लेकिन मैं वार करती रहूंगी! देखती हूं कि ये कवच कब तक मेरे तांत्रिक अंकुश को रोक पाता है!
नागराज ने विसर्पी को तो बचा लिया था-
लेकिन खुद मुसीबत में फंस गया था-
मुझे इनके वारों का जवाब देते हुए इनको अंकुश की दासता से मुक्त भी करना है। कोई तरीका जल्दी ही सोचना होगा!

इनके मस्तक में अंकुश धंसे हैं! इसलिए इन पर वह तरीका आजमाना पड़ेगा, जो मैंने मरलगंट पर आजमाया था। सूक्ष्म सर्पों द्वारा अंकुश को ढक कर उसका संपर्क इनके शरीर से काटना होगा!
लेकिन ये काम होगा कैसे? नागार्जुन मेरे सर्पों को इन तक पहुंचने से पहले ही काट रहा है!
इसको बाण चलाने से रोकना होगा!
सर्पसेना तो यह काम कर नहीं सकती! इसलिए यह काम मेरी विष फुंकार करेगी!
फूऊऊऊऊऊन
अब मैं इनके मस्तक में सूक्ष्म सर्प घुसा सकता हूं!
लेकिन तभी-
आऽऽऽह! नागप्रेती! मुझे खाने की कोशिश मत कर! वर्ना मोम की तरह पिघल जाएगा!

नागप्रेती को मैं आत्महत्या नहीं करने दूंगा! लेकिन मुझे खाने के चक्कर में यह मेरे पास आ गया है, और मेरे सूक्ष्म सर्प इसके अंकुश तक पहुंच गए हैं!
अब नागप्रेती नगीना का गुलाम नहीं रहेगा!
आऽऽऽह!
शाबाश, नागदेव! अब सर्पराज और मैं मिलकर इसको चीर डालेंगे!
ओह! ये मुझ पर चारों तरफ से हमला कर रहे हैं! और मैं इनको नुकसान पहुंचाना नहीं चाहता!
अगर इनको मुक्त करने में इतनी मुसीबत है तो मैं नागद्वीप की पूरी जनता को अंकुश से भला कैसे मुक्त करा पाऊंगा!

वेदाचार्य और फेसलेस, नागपाशा को ढूंढ रहे थे–
ऐसे गुरुदेव और नागपाशा को ढूंढने में तो बहुत वक्त लगेगा, दादाजी! आखिर हम छिप-छिपकर क्यों बढ़ रहे हैं?
हमको नागद्वीप के किसी भी वासी के सामने नहीं आना है, फेसलेस! वर्ना हमारा समय उनसे निपटने में ही बेकार हो जाएगा!
और मुझे अब वेदाचार्य कहो! दादाजी नहीं!

तड़ाक
और ये हाल करता हूं मैं उनका, जो बिना चेतावनी दिए किसी पर वार करते हैं!
आऽऽऽह! तूने मेरा जबड़ा तोड़ दिया! मैं तेरा सर तोड़ दूंगा!
ये फेसलेस की पोशाक है विषंधर! ये तुम्हारे जैसे सौ तांत्रिकों के वारों को एक साथ झेल सकती है!
लेकिन तुम इसका एक वार भी सह नहीं सकते!
आऽऽऽह! मेरा दंड! मेरा मंत्रदंड गिर गया!
जब मैं राजा बन जाऊंगा, तब इस धृष्टता के लिए तुझे मृत्यु दंड दूंगा!
तू राजा तो क्या, राजा का द्वारपाल बनने योग्य भी नहीं है!
तुम... तुम बच गए! मेरे तांत्रिक वार से बच गए!
हम यहां पर ऐसे तांत्रिक वार खाने की तैयारी करके आए थे!
लेकिन तुमने मुझे पहचाना नहीं!

अब तुम हमको बताओगे कि वे दोनों नागद्वीप पर आकर कौन सा जाल फैला रहे हैं! बताओ!

विषंधर के हाथ से मंत्रदंड गिर गया तो तुमने उसको असहाय समझ लिया!

अब तुमको इस गलती पर पछताने का मौका नहीं मिलेगा!

इस संबंध में जानने के लिए पढ़ें: विषकन्या

अब गुरुदेव और नागपाशा जी के सामने तुम दोनों की लाशें ही जाएंगी!

और नागद्वीप में ही-
नागदेव की दाढ़ी से तो मैं इच्छाधारी कणों में बदलकर बच जाऊंगा!

लेकिन उसके बाद क्या करूंगा! नागार्जुन तो फिर से होश में आ गया है!
टंssन
अगर मैं सतर्क न होता तो मेरी गर्दन धड़ से जुदा हो गई होती!

अब ये चारों एक साथ मेरी तरफ बढ़ रहे हैं! तीव्र विष फुंकार का प्रयोग करना पड़ेगा!

लेकिन- गरुड़दंड की वायु-फुहार ने विषफुंकार को बिखेर दिया-

ओफ! मुझे इनसे लड़ाई नहीं लड़नी, बल्कि इनको अंकुश से मुक्त करना है!
अंकुश इनके दिमागों को कंट्रोल कर रहा है। अगर किसी तरह से मैं वह कंट्रोल हटा सकूं तो...
...एक तरीका है! सम्मोहन! सम्मोहन से मैं इनके दिमागों को वश में कर सकता हूं!
देखना यह है कि अंकुश की तंत्र शक्ति और मेरे सम्मोहन के टकराव में कौन जीतता है!
नागराज की आंखें दहक उठीं-
और चारों के बढ़ते कदम रुक गए-
रुक जाओ! अंकुश का प्रतिरोध करो!
निकाल फेंको इसे अपने मस्तकों से!
ह...हां! हम अंकुश को निकाल देंगे!
वाह! सम्मोहन असर कर रहा है!
यह दृश्य देख रही, नगीना चौंक उठी-
नहीं! आगे बढ़ो, गुलामो! चीर डालो!
चीर डालो नागराज को!
अंकुश का पलड़ा भारी हो गया-
आऽऽऽ ह!

इनके वारों से मुझे तकलीफ तो जरूर हो रही है, लेकिन मुझे अपने सम्मोहन को टूटने नहीं देना है। बल्कि इसे और तीव्र करना है!
ताकि सम्मोहन अंकुश पर हावी हो सके!
नहीं! नागराज के टुकड़े-टुकड़े कर दो!
रोक दो वार! निकाल फेंको अंकुश को!
तुम्हारा दुश्मन अंकुश है, नागराज नहीं। खींच डालो उसे शरीर से बाहर!
कशमकश जारी थी! कभी अंकुश की शक्ति भारी पड़ रही थी-
कभी नागराज का सम्मोहन
लेकिन इच्छा शक्तियों के इस युद्ध में जीत नागराज की ही हुई-
आहा!
ओह!
तेरे सम्मोहन ने मेरा तंत्र तोड़ डाला! लेकिन तेरा ये प्रयास व्यर्थ है नागराज! क्योंकि मैं इन पर दुबारा वार करके इनको अपना गुलाम बना लूंगी!

अब ऐसा नहीं होगा नगीना! तेरा कोई भी अंकुश नागराज नाम की दीवार को पार नहीं कर पाएगा!

अब तुझे अंकुश छोड़ना होगा नगीना! वरना इस अंकुश का खतरा बना रहेगा!
आऽऽह!

इस अंकुश को मेरे हाथों से दुनिया की कोई भी शक्ति गिरा नहीं सकती, नागराज! हां, अगर मैं इसे खुद छोड़ दूं तो और बात है!
अगर मैं इन सबको गुलाम नहीं बना सकती तो इनको होश में भी नहीं रहने दूंगी!

मारो मारो काट डालो खत्म कर दो
?
अब ध्यान से सुन नागराज! सुन ये कोलाहल! तेरी मौत की आवाज है ये! क्योंकि अब पूरी नागद्वीप की प्रजा मेरे आदेश पर तेरा पीछा करने आ रही है। देखें कि तू कितनों को सम्मोहित कर पाता है!

और वहां से थोड़ी दूर पर-
आऽऽऽह! इससे पहले कि ये कुंडलियां हमारी हड्डियां तोड़ दें, अपना वार कर दो फेसलेस!
वेदाचार्य का आदेश मिलते ही-

फेसलेस की 'पाऊच' से एक यंत्र, बाहर जमीन पर आ गिरा-
हा हा हा! ये है तेरा वार!
मेंढक जितना बड़ा यंत्र!

तुम्हारी तरह इसको भी मैं चूर-चूर कर दूंगा!
लेकिन इससे पहले कि विषंधर का संपर्क निल्फिमरी यंत्र से हो पाता-

एक तेज बवंडर ने उसको हवा में उछाल दिया-

ये यंत्र सिर्फ एक मिनट तक तुझको हवा में उठाए रखेगा। फिर ये अपने-आप बन्द हो जाएगा।
और तू ही सोच कि जब तू इतनी ऊंचाई से नीचे गिरेगा, तो तेरा क्या हाल होगा!

...बंधक बनाते हैं!

यंत्र से निकले रश्मियों के टुकड़ों ने ऊपर उठकर विषंधर को जकड़ना शुरू कर दिया–

और फिर हल्के होते बवंडर के साथ-साथ विषंधर नीचे आता गया–

इनसे छूटने की कोशिश मत करना विषंधर! असफल रहोगे! ये तिलिस्मी रस्सियां हैं!

जितना छट-पटाओगे उतनी ही और कसती जाएंगी!

राजा नागराज की भस्म, नागपाशा की त्वचा और कुछ रसायन! क्या करना चाहता है गुरुदेव?
कहीं उस ग्रंथ का आकार बढ़ाना जैसा तो नहीं है विषंधर?
कुछ-कुछ वैसा ही है!
ओह! मैं समझ गया कि गुरुदेव क्या कर रहा है! अनर्थ होने जा रहा है फेसलेस! मेरे साथ आओ!
हमको नागपाशा और गुरुदेव को रोकना होगा! किसी भी कीमत पर!
लेकिन जाने से पहले मुझे तो खोलते जाओ! चले गए! नहुहुहु!
नागद्वीप के भावी राजा की ये दशा! इन सबको मृत्यु दंड दूंगा!
पास में ही-
इन्तजार की घड़ियां समाप्त होने वाली हैं नागपाशा! बस एक घंटे बाद तुम नाग द्वीप के सम्राट होगे!
कभी नहीं!
वेदाचार्य! तू...तू यहां तक भी पहुंच गया!
इस बार मैं तुझे अपने हाथों से खत्म करूंगा!

से थोड़ी ही दूर - एक और
टकराव नागद्वीप को कंपा रहा था
नागद्वीप की प्रजा को मैं तेरे अंकुश से कैसे मुक्त करूंगा, यह तो मैं नहीं जानता! लेकिन उनको मुक्त करने से पहले यह अंकुश तेरे हाथों से गिराना होगा!

मैं कह चुकी हूं कि ये असंभव है नागराज!
इस दुनिया में कुछ भी असंभव नहीं है नगीना...
...तुम्हें अंकुश गिराना ही होगा!

समझता है कि मैं जल में सांस
ले पाने के कारण तड़पकर अंकुश गिरा
लेकिन ऐसा नहीं होगा! नागराज
जल में मरेगा!

ओह! नगीना ने मुझे किसी लचीले पारदर्शी खोल में ढक दिया है!
अब न तो मैं सर्प शक्तियों का प्रयोग कर सकता हूं और न ही इच्छाधारी रूप में बदलकर मुसीबत से बच सकता हूं!

और मुसीबत इन गुलाम शार्क मछलियों के रूप में मेरी तरफ बढ़ी आ रही है!

और इनके तेज दांत इस लचीले आवरण के ऊपर से भी मेरे शरीर को काटने की क्षमता रखते हैं!
हमला कई तरफ से हो रहा है! बचना असंभव है!
इनका ध्यान दूसरी तरफ मोड़ना होगा!
और शार्क का ध्यान सिर्फ
ही चीज खींच सकती है!...
...खून की गंध! लेकिन इस आवरण के बाहर तो मेरा कोई सर्प नहीं निकल सकता! मैं इनमें से किसी का खून निकालने के लिए खरोंच तक नहीं मार सकता!
सिर्फ एक रास्ता है! लेकिन उसके लिए मुझे जान को दांव पर लगाना होगा!
नागराज, तेजी से एक शॉर्क के खुले मुंह में घुसता चला गया-
और फिर अन्दर से एक शक्तिशाली दबाव, शार्क
जबड़ा चीरता चला गया-
खून की लकीरें, पानी में तेजी से घुलने लगीं-

और खून की गंध मिलते ही शार्कों की गुलामी पर उनकी भूख हावी हो गई-
एक बेजुबान प्राणी बेकार में मारा गया! खैर! जब तक शार्कों का ध्यान अपनी साथी को खाने में लगा है, तब तक मुझे इस आवरण से निकलने का रास्ता तलाश लेना चाहिए!
लेकिन इससे निकलूं कैसे? इस पर तो जितना भी जोर लगा लो, रबर की तरह खिंचता चला जा रहा है! इसका लचीलापन खत्म करना होगा!
शीतनाग! मुझे एक बार फिर तुम्हारी शीत फुंकार की जरूरत है!
शीतनागकुमार की शीत फुंकार ने आवरण को जमाकर उसको कड़ा करना शुरू कर दिया-
और इस बार नागराज की शक्ति के सामने आवरण टिक नहीं पाया-
ये... ये आजाद हो गया! इस पर दूसरा वार करना होगा! तुरन्त!

नहीं नगीना! अब तुझे वार करने का मौका मैं नहीं दूंगा। क्योंकि मैं जिस चीज की तलाश में तुझे समुद्र में लेकर आया था, वह मुझे सामने नजर आ रही है!
कुछ ही पलों बाद जब नागराज, नगीना की तरफ बढ़ा तो उसके हाथ में था-
जूता! नागराज मुझे जूते से पीटना चाहता है!
तू क्या समझ रही है, ये मैं जानता हूं नगीना! मैं तुझे जूते से नहीं, बल्कि जूते में कैद उस 'ईल' मछली से पिटवाना चाहता हूं, जो स्पर्श करते ही बिजली का ऐसा तेज झटका देती है, जो घोड़े को भी बेहोश कर दे!
नगीना तो इस झटके से तांत्रिका होने के कारण बच गई, लेकिन उसका अंकुश हमेशा के लिए समुद्र की अतल गहराइयों में खो गया है। अब मुझे नाग द्वीप की प्रजा को अंकुश से मुक्त करना है!
नागराज अब नागद्वीप वासियों को मुक्त कराने जा रहा है! लेकिन वे उसे जिन्दगी से मुक्त कर देंगे!

क्योंकि जिनके शरीरों में मैं अंकुश धंसा चुकी हूं, वे अभी भी मेरे गुलाम हैं!
और इसी वक्त- नागद्वीप की उस गुप्त गुफा में-
ये बचकर जाने न पाएं नागपाश! प्रक्रिया पूरी होने तक मैं कोई खतरा मोल लेना नहीं चाहता!
तू अप्राकृतिक कार्य कर रहा है गुरुदेव! इसीलिए तेरे यंत्र को नष्ट करने में प्राकृतिक शक्तियां भी हमारा साथ देंगी!
हम बचें या न बचें, लेकिन हम तेरे यांत्रिक गर्भाशय को नष्ट करके ही जाएंगे!

रक्तबीज के संबंध में जानने के लिए पढ़ें : नागद्वीप

मुझसे क्यों मदद मांग रहा है मूर्ख ?! मैं तो खुद व्यस्त हूं! केंदुकी से मदद मांग!
केंदुकी! नागपाशा को कोई अतिरिक्त शक्ति दे!

दूर लैब में बैठे केंदुकी ने यंत्रों से कुछ छेड़छाड़ की, और नागपाशा का शरीर चमकने लगा-
आहा! मैं ऊर्जामय हो गया!

अब ये यंत्र मुझ पर वार करते ही खुद झटका खाकर नष्ट हो रहे हैं!
अब इसी तरह से तू भी नष्ट होगा फेसलेस!
हमको पहले से ही आभास था कि हमारे तिलिस्मी यंत्र से बचने के लिए तू ऐसा ही कुछ करेगा नागपाशा!
हम इसके लिए भी तैयार हैं!

अब तू जहां पर भी पैर रखेगा, वहां पर विस्फोट होगा! क्योंकि मैंने तिलिस्म द्वारा जमीन में विपरीत ऊर्जा दौड़ा दी है! और विपरीत ऊर्जाएं आपस में मिलते ही विस्फोट करती हैं!
गुरुदेव!

वेदाचार्य इस बार पूरी तैयारी के साथ आया है। और इस बार इसके साथ खतरनाक फेसलेस है। इसकी पोती नहीं ! ये गर्भाशय को नुकसान पहुंचा सकते हैं। रणनीति बदलनी पड़ेगी!
अगले ही पल-
गुरुदेव के वार ने गुफा से बाहर जाने वाले एकमात्र रास्ते को चट्टानों से बंद कर दिया-
ये क्या किया गुरुदेव? अब हम भागेंगे कैसे ?
तुमने सचमुच ये वार करके बहुत बड़ी भूल की है गुरुदेव!
भूल नहीं, अक्लमंदी की है वेदाचार्य! अब तुम ये खबर लेकर नागराज तक कभी पहुंच नहीं पाओगे!
जबकि हम कैंदुकी की मदद से यंत्रों सहित यहां से किसी दूसरे स्थान पर चले जाएंगे! अपनी प्रक्रिया को जारी रखने के लिए!
कैंदुकी, दूर प्रेषण करो!
अगले ही पल- नागपाशा एवं गुरुदेव, सभी यंत्रों के साथ अदृश्य होने लगे-
घुट-घुटकर मरना वेदाचार्य! और हर जाती सांस के साथ मुझे याद करना! अपने काल को!

हम फंस गए हैं फेसलेस! मेरे पास गुरुदेव की इस चाल की काट है। लेकिन अब वह काट लेकर मैं नागराज तक नहीं पहुंच सकता!
अब गुरुदेव सफल होकर ही रहेगा!
नागराज तक खबर या काट पहुंचने से कोई खास फर्क पड़ने वाला नहीं था-
क्योंकि नागराज के सामने उसकी मौत के रूप में मौजूद थी नागद्वीप की समस्त जनता-
मारो! मार डालो नागराज को! यह हमारी स्वामिनी नगीना का आदेश है!

हा हा हा
हा हा!
अब मौत से बचकर दिखा नागराज! देखूं कि तू हजारों हुड्धाधारी नागों से भला कैसे निपट पाता है!
मेरे शरीर में इतना विष है नगीना...
...जो हजारों तो क्या, लाखों सर्पों को भी बेहोश कर दे! और मेरे शरीर में इतने सर्प हैं, जो तेरे सारे अंकुशों को निकाल फेंके!
फूऊऊऊ
और अगर तुम्हारी फुंकार को मेरा तंत्र-मुंड बीच में ही पी जाए, और मेरे गुलामों तक न पहुंचने दे तो क्या करोगे, नागराज!
मेरे खजाने के रत्नों ने नगीना की तंत्र शक्ति को कई गुना बढ़ा दिया है। वह मेरे वार को बेकार कर रही है, और ये धारदार हथियार मेरे अंग काटने पर उतारू हैं!
अब मुझे भी एक सेना का इन्तजाम करना होगा!

ताकि मैं शांति से इस मुसीबत से निपटने का रास्ता सोच सकूं!
शीतनागकुमार, सौडांगी, नागू और मेरे शरीर में बसने वाले तमाम इच्छाधारी सर्पो! मेरे शरीर से बाहर आओ, और नागद्वीप वासियों से टक्कर लो!
पर ध्यान रहे! हमको इन्हें नुकसान नहीं पहुंचाना है। इनको अंकुश से मुक्त कराना है!
नागराज के शरीर से सैकड़ों सर्प बाहर
आने लगे-
वाह, नागराज! अद्भुत है तू और अद्भुत हैं तेरी शक्तियां! लेकिन नगीना तुझे अपने अरमानों पर पानी फेरने नहीं देगी!
एक भीषण युद्ध छिड़ गया-
जैसे ही तेरा पलड़ा भारी होगा वैसे ही मैं भी युद्ध में कूद पड़ूंगी!

नागराज को राहत तो जरूर मिली थी! लेकिन सिर्फ थोड़ी सी-
इनमें से कुछ के अंकुशों को तो मैं सूक्ष्म सर्पों से दकवा सकता हूं! लेकिन नावद्वीपवासियों की तादाद बहुत ज्यादा है! मेरे तो इनको मुक्त करने में ही महीनों लग जायेंगे!
सम्मोहन ही एक-मात्र रास्ता है!
लेकिन इनको एक साथ सम्मोहित करूं तो कैसे? सम्मोहन, आंखों से होता है, और इतनी बड़ी भीड़ को सम्मोहित करने के लिए मेरी आंखों का साइज कम से कम एक पूरे इन्सान जितना तो होना ही चाहिए! ताकि ये सभी एक साथ मेरी आंख को देख सकें!
और यह असंभव है!
या... शायद संभव है! मेरे ध्वंसक सर्प रेतीली जमीन का तापमान बढ़ाकर उसको पिघला रहे हैं! बन गया काम!
नागराज ध्वंसक सर्प एक ही स्थान पर छोड़ता चला गया-
और वहां की रेत तेजी से पिघलने लगी-
ये नागराज अपने ध्वंसक सर्प जमीन पर मार-मारकर बेकार क्यों कर रहा है? क्या करना चाहता है नागराज?

रेत पिघलकर शीशे में बदल रही है, और शीशा रेतीली जमीन में गड्ढा हो जाने के कारण एक खास आकार ले रहा है!...
...एक लैंस का आकार!
विशाल लैंस!
और कुछ ही पलों बाद-
नागद्वीप के वासियो! इधर देखो! मैं यहां हूं! यहां है तुम्हारा दुश्मन नागराज!
देखो! गौर से देखो! मेरी आंखों में देखो! और देखते रहो! देखते रहो!
अब तुम मेरे सम्मोहन के वश में हो!...
...अंकुश के वश में नहीं हो! मेरा हुक्म मानो SSSS उखाड़ फेंको ये अंकुश अपने-अपने शरीरों से!
उखाड़ फेंको SSSS

नागराज का सम्मोहन बहुत शक्तिशाली है! नागद्वीप वासी अपने अंकुश निकालने की चेष्टा कर रहे हैं! यह नहीं होगा! नगीना ऐसा नहीं होने देगी!...
... नहीं होने देगी!
कड़ड़ड़ड़ड़
तूने लेंस तोड़ दिया नगीना! लेकिन अब तक आधे नागद्वीप वासी अंकुश निकाल चुके हैं!
अब वे तेरे वश में नहीं हैं...
...आऽऽऽह!
लेकिन आधी जनता अभी भी अंकुश के वश में है, नागराज! अब आजादों और गुलामों में जंग होगी! खून की नदियां बहेंगी! मिट जायगा नागद्वीप! अगर ये मेरा नहीं होगा, तो किसी का नहीं होगा!
वड़ाम

थोड़ी ही दूर पर-
ओऽऽऽह! आऽऽऽह!
चट्टानें बहुत भारी हैं! इनको हटाकर रास्ता खोल पाना असंभव है!
हम बन्द हो गए हैं, फेसलेस! अब एक ही रास्ता है। मैं नागराज या कालदूत से मानसिक संपर्क बनाने की कोशिश करता हूं!
उसकी जरूरत नहीं है, दादाजी... मेरा मतलब... वेदाचार्य...
... आप पीछे हटिए, रास्ता मैं खोल देती... देता हूं!
कैसे?
अन्दर आते समय मैं कुछ तिलिस्मी विस्फोटक गुफा के द्वार पर छोड़ आया था! मैं उसको यहां से संचालित करके फोड़ सकता हूं!
ऐसा था तो तूने मुझे पहले क्यों नहीं बताया?
आपको कसरत करता देखकर मजा आ रहा था! अब आप पीछे हटिए...
कड़ाम
...मैं रास्ता खोल देता हूं!
अब जल्दी करो फेसलेस! इसको गुरुदेव की प्रक्रिया पूरी होने से पहले अपनी योजना पूरी कर लेनी है!
लेकिन योजना है क्या?

और उधर– नागद्वीप वासियों के दो गुट एक-दूसरे के सामने युद्ध के लिए तैयार थे–

देखो नागराज! देखो! नागद्वीप का विनाश!

मेरा आदेश पाते ही मेरे गुलाम दुश्मनों पर टूट पड़ेंगे!

–बल्कि आदेश लेगी!

मुझसे!

विसर्पी!

आपका पीछा करता अंकुश ने कैसे छोड़ा महात्मन?

कालसर्पी से लड़ते-लड़ते अंकुश एकाएक गायब हो गया नागराज!

मैं समझ गया! चूंकि अंकुश आपके शरीर में धंस नहीं पाया था, इसीलिए नगीना के हाथ से अंकुश गिरते ही वह भी गायब हो गया!

गुलामों पर तेरा आदेश चलता है, और तुझ पर मेरा नगीना! अब अपने 'गुलामों' को आदेश दे कि वे अंकुश को निकाल फेंके!
आऽऽऽह! मैं राजदंड की आज्ञा का विरोध नहीं कर पा रही हूं! गुलामो... अंकुशों को अपने-अपने शरीरों से निकाल दो!
नगीना के हुक्म का पालन हुआ-
और नागद्वीप वासी अपनी सामान्य अवस्था में लौट आए-
अब मैं तुझे राजदंड की शक्ति से बन्दी बनाती हूं नगीना! तुझ पर राजद्रोह का मुकदमा चलेगा!
चलो! नगीना और उसके अंकुश का आतंक समाप्त हुआ! अब हम कुछ पल चैन से बैठ सकेंगे!
नहीं, महात्मन्! नागद्वीप पर नगीना से भी ज्यादा बड़ा खतरा मंडरा रहा है!

वेदाचार्य!

नागद्वीप के कारण पूरे विश्व पर खतरा मंडरा रहा है महात्मा कालदूत!

कैसा खतरा वेदाचार्य? आप तो गुरुदेव एवं नागपाशा के पीछे गए थे!

खतरा उनके ही कारण है! गुरुदेव, राजा मणिराज की भस्म और नागपाशा की त्वचा से एक बालक पैदा करा रहा है। कृत्रिम गर्भाशय द्वारा! और अगर यह बच्चा पैदा हो गया तो वह मणिराज का पुत्र होगा! नागद्वीप का वारिस!

और उसका आधा पिता होने के कारण नागपाशा होगा...

...नागद्वीप का कार्यकारी सम्राट!
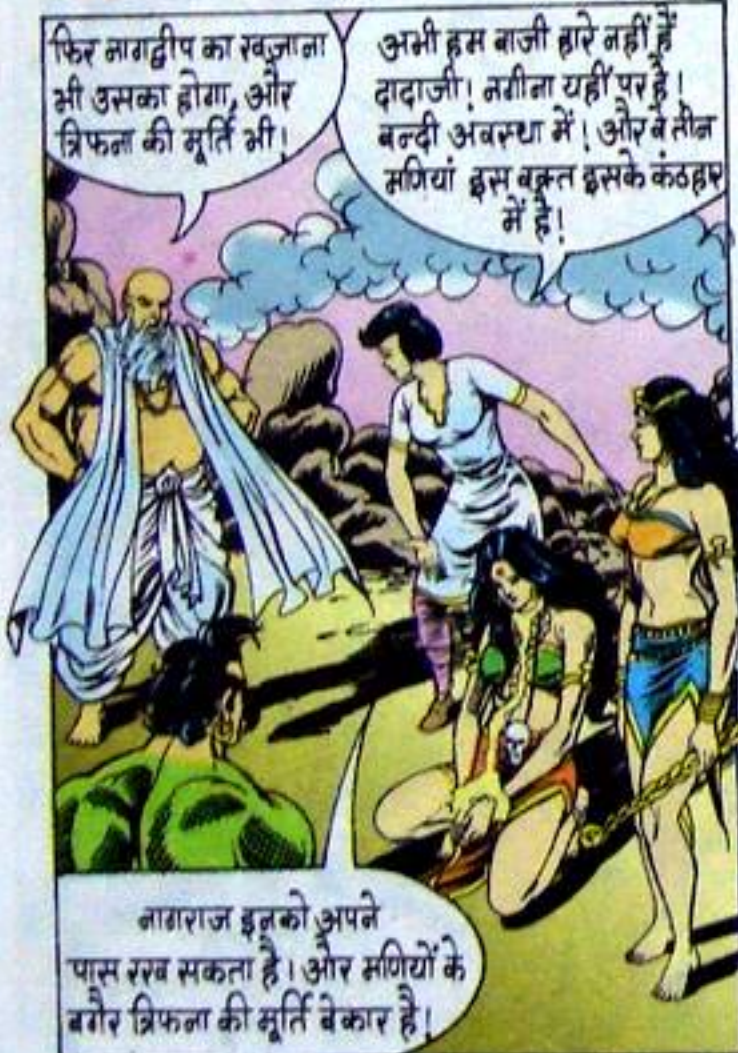
फिर नागद्वीप का खजाना भी उसका होगा, और त्रिफना की मूर्ति भी!

अभी हम बाजी हारे नहीं हैं दादाजी! नगीना यहीं पर है! बन्दी अवस्था में! और वे तीन मणियां इस वक्त इसके कंठहार में हैं!

नागराज इनको अपने पास रख सकता है। और मणियों के बगैर त्रिफना की मूर्ति बेकार है!

वाह! यह तो सही बात है नागराज! नगीना का कंठहार उतार लो!

ठीक है दादाजी!

नागराज के हाथ आगे बढ़ाते ही-

नगीना एकाएक अदृश्य हो गई-
ये... ये क्या ? नगीना अपनी तंत्र शक्तियों की मदद से गायब हो गई!
यह... यह असंभव है नागराज!
राजदंड के बंधनों में कैद प्राणी की हर शक्ति खत्म हो जाती है। नगीना अपने तंत्र का प्रयोग कर ही नहीं सकती थी।
कुमारी विसर्पी सत्य कह रही है। मुझे यहां पर किसी और शक्ति का आभास हो रहा है!
ऐसी शक्ति, जिसे मैंने पहले कभी महसूस नहीं किया!
यह यांत्रिक शक्ति है महात्मन्! गुरुदेव की यांत्रिक शक्ति!
वही नगीना को उठा ले गया है। मणियां हासिल करने के लिए!
अब एक ही उपाय है त्रिफना को बचाने का! नागद्वीप का शासन और राजदंड नागपाशा के हाथ में नहीं जाना चाहिए!
और ऐसा करने का एकमात्र रास्ता है...
... नागराज और विसर्पी का विवाह!

आपका सुझाव तो दिल को खुश कर देने वाला है वेदाचार्य। लेकिन इस विवाह से हासिल क्या होगा?
अगर उस शिशु के पैदा होने से पहले नागराज और विसर्पी का विवाह हो गया तो नागराज नागद्वीप का सम्राट बन जाएगा!

परन्तु यह विवाह शीघ्रातिशीघ्र हो जाना चाहिए! वरना अगर वह शिशु पहले पैदा हो गया...
...तो वह नाग द्वीप का सम्राट होगा! नागराज या विसर्पी नहीं!
और उस बच्चे का आधा पिता होने के कारण शासन नागपाशा के हाथों में चला जाएगा! राजदंड भी चला जाएगा!
और त्रिफना भी!

अगर नागराज और विसर्पी को इस विवाह पर आपत्ति नहीं हो तो मैं अभी सारे नागद्वीप का न्यौता भेज देता हूं! बड़ी धूमधाम से होगी ये शादी!
नहीं महात्मा कालदूत! ये शादी गुप्त रूप से होगी! ताकि नागपाशा एवं गुरुदेव को इसकी भनक तक न लगने पाए!
ठीक है! तुम दोनों का क्या कहना है, नागराज और विसर्पी?

इस बात पर विचार करने का समय है ही नहीं महात्मन्! अब हमारी हामी कोई मायने नहीं रखती! अगर दुनिया को खतरे से बचाना है तो इस विवाह को करना ही होगा!
मेरा विचार भी नागराज जैसा ही है महात्मन्!
ठीक है! राजपुरोहित को बुलाओ!
और विवाह की तैयारियां शुरू करो!

आनन-फानन में कालदूत की गुफा में मण्डप लग गया-
और मंत्रोच्चार के साथ विवाह की प्रक्रिया शुरू हो गई-
ओऽऽऽम गरुड़ ध्वज... ओम पुण्डरी काक्ष...

विसर्पी, भारती का नागराज के प्रति प्यार कैसे जानती है? यह जानने के लिए पढ़ें: फन

नागपाश!

ये... ये नागपाश है! लेकिन इसने राजदंड कैसे उठा लिया? राजदंड इसके वश में कैसे आ गया?

लेकिन कैसे? कैसे?
इस शिशु की वजह से! मणिराज की भस्म और नागपाशा की कोशिकाओं से इसका निर्माण हुआ है!
इसीलिए अब ये नागद्वीप का सम्राट है, और इसका आधा पिता नागपाशा कार्यकारी सम्राट!
यही नहीं राजदंड की शक्ति से अब नगीना भी हमारी गुलाम है। और उसने तीनों मणियां हमको सौंप दी हैं!
नागपाशा! त्रिफना के मस्तकों पर मणियां स्थापित करो, और भूत, भविष्य तथा वर्तमान के राजा बन जाओ!
मणियां खांचों में स्थापित होते ही-
अब आप नहीं करेंगे तो मैं करूंगा महात्मा कालदूत! मैं नागद्वीप की प्रजा नहीं हूं! त्रिफना छीन लूंगा मैं इससे!
पूरा वातावरण एक चमक और गर्जना से भर गया-
कुछ करिए महात्मा कालदूत! रोकिए इस दुष्ट को!
ये अब हमारे सम्राट हैं विसर्पी! इनके विरुद्ध हम कुछ नहीं कर सकते!
हा हा हा! तूने मुझे त्रिफना की शक्ति दिखाने का मौका दे दिया नागराज!
अब मैं त्रिफना की शक्ति से तुझे भविष्य में फेंक दूंगा!

एक तरफ तीन कालों के सम्राट नागपाशा की असीम शक्ति और दूसरी तरफ अशक्त नागराज की दृढ़ इच्छाशक्ति। फैलेगा विनाश या स्थापित होगी शांति? निर्णय करेगा...

महायुद्ध

इस महागाथा को समापन की मंजिल तक पहुंचाता एक प्रलयंकारी विशेषांक